आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण: - कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

● वर्ष - 10 ● अंक-2584 ● उदयपुर, शुक्रवार 21 जनवरी, 2022 ● प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन ● कुल पृष्ठ : 4 ● मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

राजगुरू नगर पुणे (महाराष्ट्र) दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को मुम्बई माता बाल संगोपन संस्था, महात्मा गाँधी विद्यालय के सामने वाडा रोड राजगुरुनगर, पुणे में संपन्न हुआ।
शिविर सहयोगकर्त्ता रोटरी क्लब ऑफ डायनोमिक भोसरी, रोटरी क्लब ऑफ राजगुरु, मुम्बई माता बाल संगोपन संस्था का रहा। शिविर में 242 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 35, कैलीपर माप की सेवा हुई। ऑपरेशन हेतु 7 का चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री अशोक जी पगारिया (अध्यक्ष रोटरी क्लब भोसरी), अध्यक्षता श्री अजीत जी बालुडा (रोटरी अध्यक्ष राजगुरुनगर), विशिष्ट अतिथि श्रीमती शर्मीला जी (संगोपन संस्थान राजगुरुनगर), श्री विजय जी बसाली (समाजसेवी), श्री प्रदीप जी कासवा (समाजसेवी), श्री कविता जी (समाजसेविका), श्री पी.एम. जैन (एडवोकेट पूणे), डॉ. विजय जी कार्तिक (ऑर्थोपेडिक डॉक्टर) के निर्देशन में कैलीपर्स माप टीम श्री नेहाश अमीतकुमार जी मेहता (पी.एन.डो), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी (सहायक), श्री हरिश जी रावत (सहायक) ने भी सेवायें दी।

कुकटपल्ली (तेलंगाना) दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 9 जनवरी 2022 को एवं सत्य साक्षी संघ, लोढ़ा अपार्टमेंट के पास, एस.बी कॉलोनी कुकटपल्ली हैदराबाद में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता सत्य साक्षी संघ कुकटपल्ली हैदराबाद रहा। शिविर में 150 का रजिस्ट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 24, केलीपर माप 21 की सेवा हुई व 08 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती जया रमेश जी जागीरदार (समाजसेविका), अध्यक्षता श्री रामया (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री पारस जी जागीरदार जी (समाजसेवी), श्रीमती अल्का जी चौधरी (शाखा संयोजिका), श्री धारीणी जागीरदार जी (समाजसेवी), डॉ. अजुमुदीन जी के निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री आर.एन.ठाकुर (पीएनडो), श्री नाथूसिंह जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश त्रिपाठी जी, श्री बहादुर सिंह (सहायक), श्री अनिल जी (विडियोग्राफर) ने सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 10.00 बजे से

श्री लोकमान्य तिलक कम्यूनिटी हॉल, तिलक नगर, इन्दौर, मध्यप्रदेश
अग्रवाल भवन, महाराजा अग्रसेन भवन, गांधी रोड, रेलवे स्टेशन रोड, देहरादून
सैनी धर्मशाला, सर्रा मोहल्ला, जाजर रोड, रोहतक, हरियाणा

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

फ्लोरेंस फिजियोथैरेपी एवं वैलनेस क्लिनिक बदलापुर पड़ाव जोनपुर, उ.प्र.
रूपाली डेवलपर्स प्रा. लि. काली चौरा, रैदपुर, आजमगढ़, उ.प्र.
चैन्नई, तमिलनाडू
कल्याण मण्डप, मेन रोड, सिमलीगुडा, उड़ीसा

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

सीतामाता मन में कुछ सोच रही है लक्ष्मण जी बोल उठे।

माँ यह कोई बात नहीं,
दोषी मेरे तात् नहीं
दोष दूर कारक हैं ये,
सब सद्गुण धारक हैं ये।।

ये तो गुणों का भण्डार है, ये तो गुणों का समुद्र है, ये विनम्र है, ये विवेकी है, ये सत्य बोलते हैं। ये प्रजा का कश्ट दूर करते हैं। प्रजा को सुखी करते हैं, ये भूखे को भोजन करवाते, ये दिव्यांगो को ठीक करवाते हैं।

ये दयावान हैं, ये क्षमावान हैं, ये विधावान हैं, ये बुद्धिमान हैं। मेरे बड़े भाईसाहब के गुणों के सागर है। कोई दोश नहीं हुआ किन्तु पितावचन रखने को सबको छोड़ बिलखने को, कर मंझली माँ के मन का, पथ लेते है ये वन का। चार पंक्तियों में बहुत कुछ कह दिया। मंझलि माँ कैकेयी माँ से वरदान मांग लिये पिताजी अचेत होकर के गिर पड़े। बार–बार बेसुध हो गये, सुध नहीं रही। जो स्मरण सुध होय, जिनके स्मरण से सद्बुद्धि आती है। ऐसे राघवेन्द्र भगवान की .पा कैकेयी पर नहीं हुई।

गणेश भगवान की कृपा मंथरा पर नहीं हुई। गणेश भगवान की .पा आप पर हमारे पर बनी रही। भगवान की लीलाऐ है लाला कहते हैं कि रावण को मारना तो सृश्टि अवतार लक्ष्मण जी अपने पैर की अंगुलियों से नाश कर सकते थे। ये तो रावणरुपी कुविचार, ये रावणरुपी लोभ, ये रावणरुपी मोह, ये रावणरुपी घमण्ड, हम चौड़े सड़क संकड़ी, आलूबड़ा अच्छा, मिर्चीबड़ा अच्छा, दही बड़ा अच्छा लेकिन मेरे को क्या हो गया। घमण्ड किसका आ गया।

मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वह धन किसी का है दिया।।

नर सेवा : नारायण सेवा

गोविन्दपुरा गाँव, जिला भिवानी हरियाणा से आये श्री सुरेश कुमार पिता श्री राम किशन, उम्र 25 वर्ष जन्म से ही पोलियो रूपी अभिशाप झेल रहे हैं। श्री सुरेश कुमार ने कक्षा चार तक अध्ययन किया है। पिता श्री राम किशन मध्यम आय वर्गीय कृषक हैं, जो बताते हैं कि सेवा सौभाग्य के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान रूपी सेवा मंदिर की जानकारी मिली। आशा की किरण लिये संस्थान में आये और संस्थान के चिकित्सकों द्वारा जांच कर ऑपरेशन किया गया। वे बताते हैं कि मेरा यहाँ कोई पैसा खर्च नही हुआ। यह संस्थान पोलियो रूपी दानव को मारकर पुण्य का कार्य कर रही है। राजकोट, गुजरात निवासी श्री प्रतीक सोनी पिता श्री सतीश सोनी, उम्र 15 साल जो जन्म से ही मानसिक पक्षाघात के शिकार है। श्री प्रतीक सोनी ने कक्षा सात तक अध्ययन किया है। श्री सतीश सोनी का अपना सोने का व्यवसाय है वे बताते है कि– बम्बई, हैदराबाद जैसे कई महानगरों के चिकित्सालयों में इलाज कराया, परन्तु कोई सफलता नही मिल सकी। टी.वी. पर संस्थान की सेवाओं के बारे में जानकर उदयपुर आये और उसी दिन ऑपरेशन कर दिया गया। यहाँ के सेवा कार्य देखकर हर रोगी को परमानन्द मिल जाता है। संस्थान में सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है।

नारायण सेवा का आभार

जिन्दगी को उम्मीदों का सहारा कोई नहीं था। अरविन्द की रीढ़ की हड्डी निष्क्रिय और पत्नी ममता दिव्यांग। बिना सहारे खुशियों की बेल पनपती नहीं। पर इन बेसहारा को सहारा दिया नारायण सेवा संस्थान ने। आज दोनों एक – दूसरे का सहारा हैं।

वह कहता है–नारायण सेवा संस्थान में कम्प्युटर कोर्स हमने सीखा था। तीन महीने का कोर्स था वहां पर। जो हम सीखे हैं, उसका हमें यहां पर फायदा हुआ है।

मैडम पढ़ाती है अच्छी नॉलेज है। बच्चों को अच्छा से पढ़ा पा रही है। ममता कहती है, पहले मुझको कम्प्युटर के बारे में नॉलेज भी नहीं थी तो मन ये करता था कि आगे हम बढ़ चलें कि कम्प्युटर का जमाना जो आ रहा है। हमारी हार्दिक इच्छा थी कि हम कम्प्युटर का कोर्स सीखें। तो हमने वहां कम्प्युटर का कोर्स सीखा। अरविंद कहते हैं आज हमारी मेडम स्कूल में पढ़ाती है और मैं ट्यूशन पढ़ाता हूँ मतलब और भी बेसिक नॉलेज है। हमको वहां से ये बेनेफिट मिला। संस्थान ने उन्हें कम्प्युटर का निःशुल्क कोर्स प्रदान किया। जो उनकी कमाई का जरिया बन गया। संस्थान जो बेसहारा रहते हैं उनको सहारा देते हैं। खाने – पीने की सुविधा देते है। हर चीज की, वहां पर लोगें ऐसे आते हैं जो भी चल नहीं पाते है उनका ऑपरेशन हो जाता है। अच्छे से चलकर वो घर चले जाते हैं। कृतज्ञ हृदय कहता है हजारों बार नारायण सेवा का आभार।

सम्पादकीय

हमारे देश की आदिकालीन परम्परा है जयघोष की। तब से अब तक प्रत्येक शुभ कार्य में जो घोष लगते हैं वे हैं –'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो।' ये चार जय घोष नहीं वरन् भारतीय संस्कृति व सभ्यता के मानक हैं। धर्म व अधर्म का भेद सभी जानते हैं। धर्म का आशय यहाँ किसी मत, पंथ, संप्रदाय या पूजा पद्धति से न होकर नैसर्गिक धर्म से हैं। परमात्मा के गुणों का मानवीकरण ही धर्म है, इसके अंतर्गत सत्य, अहिंसा, करुणा, परार्थ आदि भावों का समावेश है। अधर्म इसका विपरीत है, अतः कामना यही की जाती है कि अधर्म का नाश हो। यहाँ अधर्म की पराजय नहीं कहा है, जय की तुक में पराजय इसलिये नहीं कहा है कि पराजित होने पर भी अस्तित्व तो रहता ही है। हमारी संस्कृति किसी भी रूप में अधर्म को स्वीकार नहीं करती है। हर प्राणी सद्भावना से जीये तथा समस्त विश्व का कल्याण हो। यही भाव 'वसुधैव कुटुम्बकं' में भी परिलक्षित होता है। इसलिये इन्हें केवल घोष नहीं मानकर संस्कृति के सूत्रों के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहिये।

कुछ काव्यमय

प्रकृति में परमात्मा को
उतारना ही जीवन है।
सद्भावों को मन में संजोना ही
सच्चा धन है।
सबका कल्याण ही जब
ध्येय होता है।
तब विश्व को मानव
एक धागे में पिरोता है।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

सेवा ही बड़ा धर्म

गुरु नानकदेव जी शिष्य मर्दाना के साथ एक गांव में पहुँचे। गांव के बाहर एक झोंपड़ी में कुष्ठ रोगी रहता था। लोग उससे घृणा करते। कोई भी उसे पास नहीं जाता। कभी कोई उसे भोजन दे जाता अन्यथा भूखे रहना ही उसी नियति थी।

गुरु नानकदेव जी झोंपड़ी में गए और पूछा– भाई, हम आज रात तुम्हारी झोंपड़ी में रूकना चाहते हैं? अगर तुम्हें कोई परेशानी ना हो तो। यह सुनकर वह हैरान हो गया, क्योंकि उसके पास कोई आना ही नहीं चाहता फिर ये कैसे उसे पास रूकने को तैयार हुए? वह सिर्फ उन्हें देखता रहा। उसे कोढ़ ग्रस्त अंग में कुछ बदलाव आने लगे।

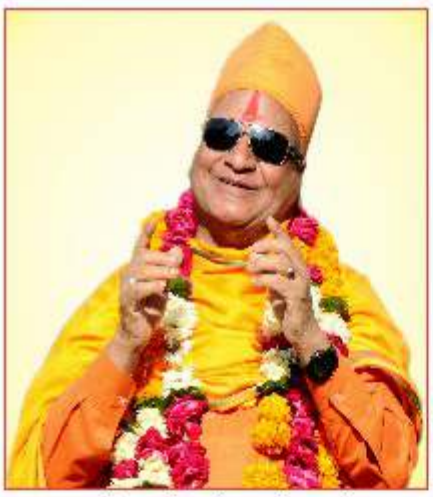

नानकदेव जी ने मर्दाना को रबाब बजाने को कहा और उन्होंने कीर्तन आरंभ कर दिया। कोढ़ी ध्यान पूर्व सुनता रहा। जब कीर्तन समाप्त हुआ, तो उसने गुरुजी के चरण स्पर्श लिए। गुरु नानकदेवजी ने उससे पूछा– भाई, कैसे हो? गांव के बाहर झोंपड़ी क्यों बनवाई हैं? उसने उत्तर दिया– मैं बहुत बदकिस्मत हूँ। मुझे कुष्ठ रोग है, कोई मेरे पास नहीं आता। कोई मुझसे बात नहीं करता। अपनों ने भी मुझे घर से निकाल दिया। मैं दुर्भाग्यशाली और धरती पर बोझ हूं। गुरु नानकदेव जी ने कहा– बोझ तुम नहीं वे लोग हैं जिन्होंने पीड़ित पर भी दया नहीं की और अकेला छोड़ दिया। आओ मेरे पास, मैं भी तो देखूँ, हाँ है कोढ़? जैसे ही गुरु नानकदेव जी ने उसे हाथों और पीठ को सहलाया, वह पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। इस चमत्कार से अभिभूत वह गुरुजी के चरणों में गिर पड़ा।

उन्होंने उसे उठाकर गले लगाते हुए कहा– प्रभु का स्मरण और लोगों की सेवा करो, यही मनुष्य के जीवन का प्रमुख कार्य है। उसे पश्चात् वह अन्य कोढ़ियों की सेवा में लग गया और ऐसी ख्याति पाई कि सभी उसका आदर करने लगे।

–कैलाश 'मानव'

कर्त्तव्यपालन

हॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री एना बेहद खूबसूरत और अपने समय की सबसे लोकप्रिय अदाकारा थी। उसके जीवनकाल में एक समय ऐसा भी आया, जब उसकी शादी हुई और एक पुत्र–रत्न की प्राप्ति हुई। वह अपने परिवार के साथ अत्यन्त प्रसन्न थी। कुछ समय पश्चात् उसके पति की मृत्यु हो गई। अब एना का सारा समय अपने पुत्र की देखभाल में ही बीतता। वह अपने पुत्र का लालन–पालन अत्यन्त लाड़–प्यार से करती। वह अपने पुत्र के मोह में इतनी आसक्त थी कि पुत्र के थोड़े से भी कष्ट पर वह बहुत बेचैन हो उठती।

एक दिन एक बीमारी से उसके पुत्र की अचानक मृत्यु हो गई। पुत्र की मृत्यु के शोक में एना ऐसी डूबी कि मानसिक अवसाद का शिकार हो गई। उस कुछ भी

अच्छा नहीं लगता। वह अपने पुत्र के ही विचारों में खोई रहती, फिल्मों में काम करना बंद कर दिया। धीरे–धीरे उसके शरीर की कांति जाती रही। अब उसे फिल्मों में काम मिलना बंद हो गया और उसकी आर्थिक स्थिति भी दिनों–दिन कमजोर हो गई।

उसकी यह हालत उसकी एक सहेली से देखी नहीं गई। वह एना को एक फकीर बाबा के पास ले गयी। उसने फकीर को एना के बारे में सब बताया और फकीर बाबा से विनती की कि एना को ठीक कर दें। फकीर बाबा ने सारा वृतान्त सुना, एना की स्थिति देखी, खड़े हुए और एना का हाथ पकड़ कर उसे एक अनाथालय में ले गए। वहाँ उन्होंने एक अनाथ बच्चे का हाथ एना के हाथ में रखा और बोले–इस बच्चे को अपना पुत्र ही समझो और इसका लालन–पालन बिल्कुल वैसे ही करो, जैसे तुम अपने बच्चे का करती थी। मोह–आसक्ति से दूर रहकर, अपेक्षाओं से रहित होकर और इस बच्चे के प्रति केवल माँ का कर्त्तव्यपालन करना और कुछ मत करना। एना ने फकीर बाबा की सलाह का पूर्ण रूप से पालन किया और वह धीरे–धीरे ठीक हो गई। मोह–आसक्ति से दूर रहकर केवल कर्त्तव्यपालन की दृष्टि से ही प्रत्येक रिश्ते को निभाना, यही सुख का मार्ग है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

पोलियो अस्पताल का काम प्रगति पर था। रोगियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही थी। जगह कम पड़ने लगी। प्रशान्त भी अब सभी कार्यों में कैलाश का हाथ बंटाने लगा था। उसने सलाह दी कि आसपास ही अगर सस्ते दामों में कोई जमीन मिल जाये तो ले लेनी चाहिये। सस्ती जमीन नगर में तो मिलना संभव नहीं था इसलिये नगर के बाहर ही देखना शुरू किया। बड़ी में ऐसी एक जमीन सबको पसन्द आ गई। कैलाश की इच्छा थी कि जमीन ऐसी खरीदें जिसमें फुलवारी उगाई जा सके। बड़ी की जमीन जब सबको पसन्द आ गई तो उसने गेंती–पावड़ा मंगाया और जमीन को खुदवाया। जमीन ऊपर से पथरीली थी मगर अन्दर से भुरभुरी थी। कैलाश को सन्तुष्टि हो गई कि यहां बागवानी की जा सकती है तो उसने भी अपनी सहमति दे दी।

शीघ्र ही तमाम औपचारिकताएं पूरी कर 80 हजार वर्गफीट जमीन खरीद ली गई बड़ी का वातावरण बहुत अच्छा है, कैलाश को यह मनभावन लगा। उसने वहां कच्ची झोंपड़ियां बनवाई और वहीं रहने लगा। चारों तरफ पौधे लगाकर फुलवारी उगाने का अपना शौक भी पूरा करने लगा। उन्हीं दिनों कैलाश का मुम्बई जाना हुआ। वहां लक्ष्मणगढ़ के रतनलाल डिडवानियां से भेंट हुई। उसने संस्था के कार्यों के पत्रक तथा पोलियो अस्पताल के रोगियों व उनके ऑपरेशन के चित्र बताए। चित्र देखते ही रतनलाल बोल उठे– नहीं ! नहीं ! यह नहीं हो सकता। कैलाश अचरज में पड़ गया। पूछ बैठा – क्या नहीं हो सकता ? वे बोले – ये तमाम फोटो जाली हैं, ऐसा संभव नहीं है। उनकी ये बात से कैलाश की हंसी छूट गई। उसने बिल्कुल भी बुरा नहीं मानते हुए उन्हें उदयपुर आने का निमन्त्रण दिया और कहा– आप स्वयं अपनी आखों से देखोगे तो आपको यकीन हो जाएगा। रतनलाल ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और एक दिन सचमुच उदयपुर आ गये। कैलाश ने उन्हें अस्पताल में घुमाया, रोगियों से मिलवाया। रोगियो से वे सीधी बात कर रहे थे, कैलाश बीच में बोलता भी तो वे टोक देते– आप बीच में नहीं बोलेगे, मैं इनसे सीधे बात करूंगा। कैलाश चुप हो गया। रतनलाल ने कई रोगियों से खोद खोद कर प्रश्न किये। लगभग ढाई–तीन घन्टे तक वे रोगियों से बातचीत करते रहे। रोगी भी दूर दूर से आये थे। इनमें एक शिलांग से आया रोगी भी था। रतनलाल का ससुराल भी शिलांग में ही था। इस रोगी से मिलकर वे बहुत प्रसन्न हो गये, उससे पूछा– तुम्हें यहां कुछ लाभ हुआ है ? तो उस रोगी ने कहा कि बहुत लाभ हुआ है, इतनी दूर से यहां आना सार्थक हो गया है।

अंग - 214

भगवान की कृपा

एक खास बात है कि सब अच्छे काम भगवान की कृपा से होते हैं। अच्छी बात मिलती है तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छे पुरुष मिलते हैं तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छी बुद्धि पैदा होती है तो वह भी भगवान की कृपा से, पारमार्थिक रुचि होती है तो वह भी भगवान की कृपा से, अच्छे के लिए परिवर्तन होता है तो वह भी भगवान की कृपा से!

सभी अच्छी बातों के मूल में परमात्मा ही हैं और सभी खराब बातों के मूल में हमारी कुबुद्धि, संसार की आसक्ति ही है। इसलिए हमारे को कोई अच्छी बात मिले, अच्छी सद्बुद्धि पैदा हो, अच्छे संत–महात्मा मिले, अच्छा संग मिले तो यह सब भगवान की कृपा है। भगवान की कृपा को स्वीकार करने से सब काम अपने आप ठीक होते हैं।

भगवान की कृपा की तरफ दृष्टि भी भगवान की कृपा से ही होती है! इसलिए मेरा सब को कहना है कि आप केवल भगवान की कृपा को मानें, किसी व्यक्ति को नहीं। व्यक्ति का संयोग भी भगवान की कृपा से ही होता है। मनुष्य शरीर भी भगवान कृपा करके देते हैं।

'भगवान की कृपा बिना हेतु होती है। जो हेतु से होती है, वह कृपा नहीं होती उसमें पुण्य कारण होता है। हमारे किसी पुण्य से कृपा नहीं होती।' जो पुण्य से हो, उसमें कृपा क्या हुई? इसलिए मनुष्य शरीर में जो भी अच्छी बात होगी कृपा से ही होगी अपने पुरुषार्थ से नहीं।